इकाई 1 आधुनिक युग की भूमिका

इकाई की रूपरेखा

1.0 उददेश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 आधुनिक युग का महत्व

1.2.1 आधुनिक युग का सीमांकन

1.2.2 आधुनिक युग की विशिष्टता

1.2.3 आधुनिक साहित्य की मूल संवेदना

1.3 आधुनिक युग : राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक संदर्भ

1.3.1 आधुनिक युग : राजनीतिक संदर्भ

1.3.2 आधुनिक युग : सांस्कृतिक संदर्भ

1.3.3 आधुनिक युग : साहित्यिक संदर्भ

1.4 आधुनिक युग की मूल संवेदना

1.4.1 राष्ट्रीय स्वाधीन चेतना

1.4.2 नवजागरण

1.5 मूल्यांकन

1.5.1 आधुनिक युग का अवदान

1.5.2 आधुनिक युग के संदर्भ में भारतीय साहित्य की पहचान

1.6 सारांश

1.7 उपयोगी पुस्तकें

1.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- आधुनिक युग का महत्व बता सकेंगे/सकेंगी;
- आधुनिक युग का आरंभ कहाँ से माना जाए, यह स्पष्ट कर सकेंगी/सकेंगे;
- आधुनिक युग किस अर्थ में अलग और विशिष्ट है, बता सकेंगे/सकेंगी;
- भारतीय साहित्य के विकास में आधुनिक युग की भूमिका का परिचय दे सकेंगी/सकेंगे;
- आधुनिक युग का राजनीतिक–सांस्कृतिक–साहित्यिक संदर्भ क्यों महत्वपूर्ण है, इसकी व्याख्या कर सकेंगी/सकेंगे;
- राष्ट्रीय स्वाधीनता और नवजागरण की आधुनिक युग की संवेदना के निर्माण में क्या भूमिका रही है, इसे समझा सकेंगी/सकेंगे; और
- आधुनिक युग का मुख्य अवदान क्या है और उसके मुख्य लक्षण क्या हैं, इसे स्पष्ट कर सकेंगी/सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

'राष्ट्रीय काव्यधारा के खंड–01 की यह पहली इकाई है–'आधुनिक युग की भूमिका। आधुनिक युग का आरंभ उन्नीसवीं शताब्दी के नवजागरण के साथ हुआ। राष्ट्रीयता को एक नया अर्थ इसी समय मिला। राजनीतिक स्वाधीनता के लिए संघर्ष–सामाजिक न्याय और समता के लिए संघर्ष से जुड़ा हुआ था। आधुनिक युग को व्यापकता और पूर्णता मिली–बीसवीं शताब्दी के लम्बे ऐतिहासिक संघर्ष के साथ–जब उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरोध की गति तेज हुई। समाजवाद उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक बना। साथ ही उसे नयी चुनौतियाँ भी मिलीं। आधुनिक युग का राजनीतिक संदर्भ जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही सांस्कृतिक–साहित्यिक संदर्भ भी।

इस इकाई में हम आधुनिक युग के सीमांकन पर विचार करेंगे क्योंकि आधुनिक युग का आरंभ सभी देशों और भाषाओं के साहित्य में एक ही निश्चित समय पर नहीं हुआ। यूरोप के आधुनिक युग से हमारा आधुनिक युग भिन्न है। भारतीय साहित्य के संदर्भ में आधुनिक युग की पहचान ही बनी नवजागरण और स्वाधीनता–संघर्ष के साथ। आपके लिए आवश्यक है कि आप आधुनिक युग की मूल प्रकृति या संवेदना को तथा उसकी पहचान बनाने वाले प्रमुख तत्वों को ठीक से जानें। इस इकाई को पढ़ते हुए आप देख सकेंगे कि आधुनिक युग क्यों पहले के युगों से भिन्न है। यह तो सही है कि प्रायः सर्वत्र आधुनिक युग का उदय स्वतंत्रता की माँग के साथ हुआ। आधुनिक युग के पहले साहित्य में एक तरह की, एक ढर्रे पर बंधी हुई भावधारा दिखाई देती है। शास्त्रीयता के इस रूझान के विरुद्ध अक्सर आधुनिक युग अधिक स्वच्छन्द दिखाई देता है। इस स्वच्छन्दता के प्रेरक तत्व या ऐतिहासिक कारण भिन्न हो सकते हैं। भारतीय साहित्य में आधुनिक युग आया तो उसके पीछे मुक्ति की व्यापक आकांक्षा प्रबल थी। स्वाधीनता–संघर्ष की चेतना के लिए सामाजिक–सांस्कृतिक सुधार के आंदोलन प्रोत्साहन दे रहे थे। स्त्री–पुरुष समानता के लिए संघर्ष इसी स्वाधीनता संघर्ष का हिस्सा था। इसलिए आधुनिक युग के भारतीय साहित्य में प्रकृति के प्रति, मानव संबंधों के प्रति, जीवन के प्रति नया रूख दिखाई देता है तो वह केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में महत्वपूर्ण नहीं है, उस राजनीतिक–सामाजिक संदर्भ के कारण भी महत्वपूर्ण है, जिससे कटकर साहित्य सृजन असंभव हो जाता है। आधुनिक युग के विकास की प्रक्रिया में गद्य के उदय पर भी ध्यान देना चाहिए जो प्रेस की स्थापना के बगैर असंभव था। यह तो स्पष्ट ही है कि गद्य के आने के साथ नयी साहित्यिक शैलियां ही नहीं चल पड़ी, वैज्ञानिक विचार चेतना का व्यापक प्रसार भी संभव हुआ। आधुनिक युग की कल्पना इस आलोचनात्मक वैचारिक दृष्टि के अभाव में नहीं की जा सकती। इस युग में पहले के युगों की तुलना में बौद्धिकता के लिए एक नया आकर्षण था। अब साहित्य विशेष वर्ग तक सीमित न रहा। पाठक–समाज का निरंतर विस्तार हुआ। इस प्रकार इस इकाई को पढ़ते हुए आप आधुनिक युग के उदय के पीछे ऐतिहासिक–सामाजिक कारणों को समझने के लिए उत्सुक होंगे।

1.2 आधुनिक युग का महत्व

आधुनिक युग के महत्व को समझने से पूर्व हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि भारत में आधुनिक युग की शुरुआत कब से हुई और क्यों हुई? यह भी जानना आवश्यक है कि इस युग की विशिष्टता क्या है। आइए, इस पर विचार करें।

1.2.1 आधुनिक युग का सीमांकन

यूरोप के संदर्भ में आधुनिक युग का आरंभ पंद्रहवीं–सत्रहवीं शताब्दी से माना जाता है। पर यह धारणा दुनिया के हर क्षेत्र या देश पर लागू नहीं की जा सकती। यूरोप के आधुनिक युग से हमारा आधुनिक युग भिन्न है। यूरोप की आधुनिक चेतना ने औद्योगिक पूंजीवाद से महाजनी पूंजीवाद तक की यात्रा करते हुए अपना स्वरूप विकसित किया। भारत के संदर्भ में आधुनिक युग के अब तक के जटिल विकास में सामंतवाद के अवशेष बचे रह गये हैं। पंद्रहवीं–सत्रहवीं शताब्दी के बीच पश्चिमी यूरोप के कुछ देशों में आधुनिक युग के उदय की संभावना उभरने लगी थी। नवजागरण, सुधार के प्रयत्न, आधुनिक विज्ञान का उदय, सामंतवाद का विघटन, उपनिवेशीकरण, औद्योगिक क्रांति–प्रायः जहाँ भी, जिस रूप में भी आधुनिक युग का उदय हुआ, उसके कुछ प्रमुख लक्षण यही थे। 1789 में फ्रांस की राज्य क्रांति के साथ स्वतंत्रता, समानता, नागरिक अधिकार–जैसी धारणाएँ विकसित हुईं जो आगे भी आधुनिकता की चेतना के उपादानों के रूप में जानी गयीं। भारतीय साहित्य में आधुनिक युग की पहचान राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष और नवजागरण की चेतना के साथ संभव हुई। 19वीं शताब्दी के आरंभ में जब अंग्रेजों के भारत में पैर जमने लगे और आधुनिक शिक्षा का प्रचलन आरंभ हुआ, उसके साथ–साथ यहाँ के शिक्षित वर्ग में एक नयी चेतना का उदय भी हुआ जो राष्ट्रीय भावना, समाज सुधार और सामंतवाद विरोधी चेतना के रूप में उभरकर सामने आई। बीसवीं शती तक आते–आते इसके प्रति–उपनिवेशीकरण तथा साम्राज्यवाद विरोध की चेतना आ जुड़ी।

1.2.2 आधुनिक युग की विशिष्टता

इस पाठ्यक्रम के संदर्भ में हमारा संबंध उन्नीसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक के विकास के क्रम से है। इस अवधि में आधुनिक युग की विकास अवस्थाओं का अध्ययन रोचक और उपयोगी हो सकता है। उन्नीसवीं शताब्दी के नवजागरण के दौरान राष्ट्रीयता की अपनी अवधारणा विकसित करने का प्रयास दिखाई देता है। यह भारतीयता की अपनी पहचान निश्चित करने वाला दौर था। कुछ आगे मैथिलीशरण गुप्त के यह सवाल पूछने तक–'हम कौन थे क्या हो गये हैं / और क्या होंगे अभी?'। आधुनिक युग की यह आरंभिक उलझन बनी हुई थी कि हमारी अतीतोन्मुखता, वर्तमान की चिन्ता और भविष्य की कल्पना के बीच ठीक–ठाक क्या रिश्ता बने। एक ओर अतीत पर जोर देते हुए वैदिक युग की वापसी की बात की जा रही थी, तो दूसरी ओर अतीत को पूरी तरह से छोड़कर पश्चिम के अनुगमन को आदर्श बताया जा रहा था। उन्नीसवीं शती के अंत तक आते–आते हम अतीत और वर्तमान के बीच एक सही वस्तुपरक और संतुलित दृष्टिकोण विकसित कर सके जो विवेकानंद, ज्योतिबा फूले, रवींद्रनाथ के माध्यम से सामने आया। फिर भी भविष्य का हमारा मार्ग क्या हो, यह द्वंद्व बना ही रहा। इसका मंथन 20वीं शती के आरंभ से ही शुरू हुआ और 1917 की सोवियत क्रांति ने एक तरह से यह स्पष्ट कर दिया कि हमारा रास्ता क्या होना चाहिए। सन् 1920 के आसपास कांग्रेस में समाजवादी मंच की स्थापना, कम्युनिस्ट पार्टी का गठन तथा अन्य कई बातें इसी सच्चाई की द्योतक थी। साहित्य में प्रेमचंद, निराला, नजरूल, जोश महीलाबादी, श्री श्री, आदि ने इस दृष्टिकोण को अभिव्यक्त किया। प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना भी इसी दृष्टिकोण के बढ़ते प्रभाव का परिणाम थी।

बीसवीं शताब्दी का आरंभिक इतिहास दो–दो महायुद्धों का इतिहास है जिसका मनुष्य की संवेदना, संबंध भावना और मूल्य भावना पर व्यापक असर पड़ा। भारत का स्वाधीनता संघर्ष, नवजागरण, सुधार के प्रयत्न, बौद्धिक दृष्टि का विकास, विश्व दृष्टि या विश्वभावना का विकास इस युग की विशिष्टता देने वाले प्रमुख तत्व हैं। क्लासिक या शास्त्रीय युग की

तुलना में यह युग साधारण या सामान्य की प्रतिष्ठा का युग है। आधुनिक युग के विकास के क्रम में समाजवाद के विभिन्न रूपों का विकास, समाजवादी आंदोलन का विकास, साधारण जन की प्रतिष्ठा में यथार्थवाद जैसी विचारधाराओं के उदय और विकास में सहायक रहा है। इस युग में हम देख सकते हैं कि किस तरह यूरोप के सम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन ने आधुनिक राष्ट्रवाद और लोकतंत्र की जड़ें मजबूत की। 1920–30 के दशक में नीग्रो जाति की प्रतिष्ठा के पक्ष में जो आंदोलन चला, उसके पीछे महात्मा गांधी का संघर्ष याद किया जा सकता है।

आधुनिक युग के विकास के क्रम में यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि किस तरह यूरोप का वर्चस्व या प्रभाव क्षीण हुआ। दूसरे विश्व युद्ध के बाद के वर्षों में एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमरीका के अनेक देशों को स्वतंत्रता मिली। कितने ही राजनैतिक परिवर्तन के साथ विश्व साहित्य जैसी पहचान भी बनाता है। आधुनिक भारतीय साहित्य अनेक सामाजिक परिवर्तनों की चेतना के साथ विश्व साहित्य की परिकल्पना से अछूता नहीं है। आधुनिक युग के अनुरूप चेतना का निर्माण जिन परिस्थितियों ने किया उनमें यातायात और संचार साधनों के विकास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

1.2.3 आधुनिक साहित्य की मूल संवेदना

आधुनिक साहित्य जिन शर्तों के साथ आधुनिक हुआ वे आधुनिक युग की विशेष ऐतिहासिक आवश्यकता का परिणाम थीं। जैसे इतिहास–दृष्टि, परम्परा का बोध, समग्र जीवन दृष्टि और वैज्ञानिक विवेक। आधुनिक साहित्य जिस नवजागरण और स्वाधीनता संघर्ष के बीच लिखा गया उसका एक व्यापक अखिल भारतीय संदर्भ था। हिंदी में आधुनिक युग के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र यदि साहित्य की विषयवस्तु में युगान्तकारी परिवर्तन कर सके तो इसलिए कि उन्हें अपने युग की समस्याओं का आभास था। साधारण जन से उनका गहरा तादात्म्य था। साधारण लोगों पर वे लिख सकते थे। गांधी जी से पहले ही वे स्वदेशी आंदोलन का सूत्रपात कर चुके थे। स्पष्ट है कि भारत में आधुनिक साहित्य के उदय के पीछे सांस्कृतिक पुनर्जागरण का व्यापक ऐतिहासिक प्रयत्न है। राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष के अगले चरण में उपनिवेशवाद–विरोध का सजग प्रयत्न भी दिखाई देता है। यह प्रयत्न विश्व भर में चल रहे उपनिवेशवाद विरोध की ही एक कड़ी है। भारत में आधुनिक साहित्य की चेतना का निर्माण करने वाले लेखकों में महत्वपूर्ण रवींद्रनाथ ठाकुर ने स्वीकार किया था कि आधुनिक युग ने हमारे साहित्य को एक ओर राष्ट्रीय चेतना से, दूसरी ओर एक प्रकार की विश्व दृष्टि से सम्पन्न किया।

बंकिम चंद्र का 'आनंद मठ', मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' और हाली का 'मुसद्दस' आधुनिक युग की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं जो राष्ट्रीय चेतना का पक्ष लेती है और साम्राज्यवाद का विरोध करती है। जवाहरलाल नेहरू की 'विश्व इतिहास की झलक' और 'भारत की खोज' महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं जो आधुनिक युग की समस्याओं और चुनौतियों के प्रति हमें संवेदनशील बनाती हैं। एक जरूरी तथ्य यह है कि स्वाधीनता संघर्ष के दौर में प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में महत्वपूर्ण रोमांटिक कविता लिखी गयी। साथ ही राष्ट्रीय भावधारा के भीतर एक नयी स्वच्छन्द चेतना का विकास देखा गया। ऐसा कवियों में उर्दू के मुहम्मद इकबाल, हिंदी के निराला, बंगला के नजरूल इस्लाम, मराठी के केशवसुत, मलयालम के. जी. शंकर कुरूप, तमिल के सुब्रह्मण्य भारती के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। आधुनिक भारतीय उपन्यास के इतिहास में ऐसी अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं आती हैं जो राष्ट्रीय अस्मिता जैसे सवाल से टकराती हैं। जैसे रवीन्द्रनाथ का उपन्यास 'गोरा'। शरतचंद्र के उपन्यास जहाँ सामंतवाद के दबावों के विरुद्ध हैं और भीतर–बाहर के विद्रोह को वाणी देते हैं वहीं

स्त्री की पीड़ा या करुणा को भी आधुनिक युग के संदर्भ में मूर्त करते हैं। प्रेमचंद (रंगभूमि, गोदान), ताराशंकर वंद्योपाध्याय (गणदेवता), विभूति भूषण, वंद्योपाध्याय (पथेर पांचाली), मानिक वंद्योपाध्याय (पदमानदीर माझी), तक्षी शिवशंकर पिल्ले (चेम्मीन), पन्नालाल पटेल (ममेला जीव), यू.आर.अनंत मूर्ति (संस्कार), फणीश्वरनाथ रेणु (मैला आंचल) की कृतियों में आधुनिक युग की संवेदना व्यक्त हुई जिसे समझने के लिए नवजागरण तथा स्वाधीनता जैसी ऐतिहासिक परिस्थितियों की याद जरूरी है।

बोध प्रश्न–1

नीचे दिये गये प्रश्नों का सही उत्तर दीजिए और अपने उत्तर इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

1. भारत में आधुनिक युग का आरंभ कब से माना जाता है :

   क) पंद्रहवीं शताब्दी से

   ख) बारहवीं शताब्दी से

   ग) बीसवीं शताब्दी से

   घ) उन्नीसवीं शताब्दी से

2. आधुनिक युग को विशिष्ट पहचान देने वाले तीन प्रमुख तत्वों का उल्लेख कीजिए :

   क) .....

   ख) .....

   ग) .....

3. आधुनिक साहित्य की मूल संवेदना को ध्यान में रखते हुए इन प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर कोष्ठकों में लिखिए :

   क) आधुनिक साहित्य किन प्रमुख शर्तों या लक्षणों के साथ आधुनिक हुआ।

   .....

   .....

   ख) राष्ट्रीय अस्मिता जैसे प्रश्न से टकराने वाले किसी महत्वपूर्ण उपन्यास का नाम लिखिए।

   .....

अभ्यास

1) भारत में आधुनिक युग की विशिष्टता क्या है? लगभग पाँच पंक्तियों में बताइए।

   .....

   .....

   .....

   .....

1.3 आधुनिक युगः राजनीतिक–सांस्कृतिक–साहित्यिक संदर्भ

आधुनिक युग ने हमारे राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक जीवन में जबर्दस्त परिवर्तन ला दिया था। ये परिवर्तन इन क्षेत्रों में कैसे घटित हुए, उसका संक्षिप्त लेखा–जोखा हम यहाँ पेश कर रहे हैं।

1.3.1 आधुनिक युग : राजनीतिक संदर्भ

औद्योगिक क्रांति ने जहाँ यूरोप में पूंजीवादी लोकतंत्र की नींव डाली और उसे मजबूत किया वहीं अपने उद्योगों की जरूरतों के चलते और नये बाजार की खोज में यूरोप के कई देशों ने एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमरीका के देशों को अपना उपनिवेश बना लिया। लेकिन पूंजीवाद के साथ स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के जो नये आदर्श स्थापित हुए उसकी हवा आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ इन देशों में भी पहुंची। इसने इन देशों में भी राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत किया। बाद में मार्क्सवादी विचारों के प्रभाव ने भी लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, समानता के आदर्श को राजनीतिक व्यवस्था के लिए आवश्यक बना दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक से पहले विश्वयुद्ध (1914) तक यूरोप का प्रभुत्व बना हुआ था। वह धीरे–धीरे कम होता गया। संयुक्त राज्य अमरीका, जापान मुख्य शक्ति के रूप में उभर रहे थे। युद्ध खत्म होते–होते रूसी क्रांति (1917) हो चुकी थी। उधर साम्राज्यवादी ताकतों के बीच संघर्ष तेज हो रहा था। अनुभव किया जा रहा था कि पूंजीवादी व्यवस्था का अंत मनुष्य के हित में है। रंगभेद, के चलते काले लोगों के दमन की प्रक्रिया शुरू हुई। दुनिया के कई राज्यों में स्त्रियाँ मताधिकार से वंचित थीं। अमरीकी संविधान के अंतर्गत महिलाओं ने यह अधिकार बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के अंत तक प्राप्त किया। भारत में स्वाधीनता आंदोलन के उदय के साथ एशिया के दूसरे भागों में भी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की लहर उठी। दोनों विश्वयुद्धों के बीच संयुक्त राज्य अमरीका, रूस, जापान प्रमुख शक्ति के केंद्र थे। रूसी क्रांति के पहले वे परस्पर सहयोगी थे। रूस के अलग होने पर शांति प्रस्तावों की पहल में संयुक्त राज्य अमरीका की महत्वपूर्ण भूमिका थी। 1934 में सोवियत संघ ने राष्ट्र संघ की सदस्यता स्वीकार की। उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध आधुनिक युग के इस खास दौर का चरित्र था। चीन की क्रांति (1911) में सुन यान सेन की महत्वपूर्ण भूमिका थी जिसका प्रभाव अगले दशकों तक बना रहा। जर्मनी में फासीवाद की विजय हुई। सैनिक शक्ति के चरम विस्तार का परिणाम था दूसरा विश्वयुद्ध। दुनिया के सारे फासिस्ट विरोधी संगठन सोवियत संघ के साथ थे। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की आंतरिक क्षमता और एकजुटता प्रकट करने के लिए जवाहरलाल नेहरू स्पेन गये। उल्लेखनीय है कि दुनिया के अनेक लेखकों, कलाकारों, विचारकों ने स्पेन के गृहयुद्ध में हिस्सा लिया। दूसरा विश्वयुद्ध (1939–1945) सबसे अधिक विनाशकारी था। बाद के शीतयुद्ध का परिणाम था–अमरीका का महाशक्तियों के रूप में उदय और आपसी संघर्ष। अमरीका का वियतनाम से लम्बा युद्ध एक ऐसी घटना है जिसने लेखकों–कलाकारों को विशेष रूप से विचलित किया।

भारत में आधुनिक युग की राजनीतिक भूमिका को समझने के लिए महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक संघर्ष को याद करना जरूरी है। अहिंसा, सत्याग्रह जैसे गांधी जी के राजनीतिक कार्यक्रमों के पीछे महत्वपूर्ण विचार थे जिनके प्रभाव एक लम्बे समय तक दिखाई देते हैं। आधुनिक भारत के निर्माता जवाहरलाल नेहरू ने अपने राजनीतिक संघर्ष के दौर में जिन मूल्यों को युगीन सार्थकता की दृष्टि से प्रतिष्ठित किया, वे हैं–धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र। नेहरू की इतिहास दृष्टि और वैज्ञानिक चेतना ने भारत में

आधुनिक युग की विशेष पहचान बनायी। गुटनिरपेक्षता जैसी उनकी नीतियाँ विश्व के आधुनिक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण तथा विचारणीय मानी जाती है। अनेक छोटे देशों के मुक्ति आंदोलन में नेहरू युग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

1.3.2 आधुनिक युग : सांस्कृतिक संदर्भ

उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय नवजागरण को यूरोप के जिन विचारकों से प्रेरणा मिली उनमें रूसो, कान्ट, जान स्टुअर्ट मिल, हर्बर्ट स्पेंसर आदि महत्वपूर्ण हैं। इस जागरण में वैज्ञानिक दृष्टि के लिए विशेष आकर्षण था। यह नवजागरण उपनिवेशवादी, दौर की ही उपज था इसलिए उसकी अपनी सीमाएँ थीं। स्वाधीनता संघर्ष ने इस मानसिकता में आगे चलकर गुणात्मक परिवर्तन उपस्थित किया। यह एतिहासिक सच्चाई है कि दुनिया में नवजागरण का काल अलग–अलग संदर्भो के साथ आता है। वह एक ही समय तक ही नियम से नहीं आता। भारत में नवजागरण का आरंभ 19वीं शताब्दी में हुआ जब यूरोपीय वैज्ञानिक–संस्कृति और भारतीय धार्मिक–संस्कृति में टकराहट हुई। भारतीय नवजागरण के केंद्र में एक समग्र मनुष्य की कल्पना थी जिसका आरंभ राजाराममोहन राय (1772–1833) के विचारों में तथा परिणति महात्मा गांधी (1869–1948) के जीवन–दर्शन में दिखाई देती है। राजाराममोहन राय ने 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। उसी प्रेरणा से महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज स्थापित हुआ। राममोहन राय ने सती प्रथा का विरोध किया और उस पर प्रतिबंध लगवाने में सफल हुए। उन्होंने हिंदु–मुस्लिम एकता के लिए भी देश की जनता को शिक्षित किया। वे बहु–विवाह जैसी सामाजिक विकृति के विरुद्ध थे और अतंर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन दे रहे थे। स्त्री शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए उनके प्रयत्नों का ऐतिहासिक महत्व है। आगे चलकर देवेन्द्र नाथ ठाकुर और केशवचंद्र सेन ने ब्रह्म समाज का नेतृत्व किया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रयत्नों से विधवा विवाह का प्रचलन आरंभ हुआ और स्त्री–शिक्षा के लिए स्कूल, कॉलेज खोले गये। स्वामी दयानंद (1824–1883) ने आर्य समाज की स्थापना (10 अप्रैल, 1875) करके नवजागरण की प्रक्रिया तेज की। वे भी जातीय संकीर्णता के विरुद्ध थे और स्त्री शिक्षा के पक्ष में थे। एक अर्थ में प्रेमदर्शन को रामकृष्ण परमहंस (1836–1886) ने सामाजिक नवजागरण का मूल मंत्र बनाया। वे सभी धर्मों की मूलभूत एकता के लिए अपने विचारों से नयी जमीन बना रहे थे। विवेकानंद (1863–1902) ने रामकृष्ण के संदेश को यूरोप–अमरीका तक फैलाया। वे वेदांत दर्शन और हिंदू धर्म की नयी व्याख्या के लिए तथा भारत की एक नयी खोज के लिए प्रसिद्ध हुए। 1873 में एनीबेंसेट भारत आयीं। उन्होंने थियोसोफिकल सोसायटी के लिए कार्य करते हुए जातिवाद जैसी संकीर्णताओं के विरुद्ध वातावरण बनाया। सर सैयद अहमद ने मुस्लिम स्त्रियों की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। मुस्लिम समुदाय के बीच नई जागृति लाने में उनका विशेष योगदान है। फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना (कलकत्ता/1800) से नवजागरण की विचारधारा को प्रसार के लिए अवसर मिला था। जब 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई तब तक नवजागरण की चेतना स्वाधीनता संघर्ष की चेतना के साथ घुलमिल चुकी थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का जितना राजनीतिक महत्व है उतना ही सांस्कृतिक महत्व है।

आधुनिक युग की एक बड़ी सांस्कृतिक चिंता थी–देश, प्रेम, राष्ट्रीय अस्मिता और विश्वभावना या विश्वदृष्टि में सामंजस्य। एक ओर परम्परा के ग्रहण या रक्षा की नैतिक जिम्मेदारी थी तो दूसरी ओर नवीनता के साथ उसके उपयुक्त सामंजस्य के विवेक का भी प्रश्न था। सत्रहवीं–अठारहवीं सदी में अंग्रेज व्यापारियों ने जो विश्व बाजार बनाया था वह मानवीय स्वाभिमान के लिए चुनौती बना। हिंदी लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1908 की 'सरस्वती'

में इसके लिए चिंता प्रकट की है। अनुमान किया जा सकता है कि भारतीय लेखक आधुनिक युग में मनुष्य मात्र की चिंता के लिए अधिक उद्विग्न थे। रवीन्द्रनाथ और प्रेमचंद का साहित्य इसी गहरी विकलता का उदाहरण है। दुनिया में मनुष्य के साथ कहाँ क्या घट रहा है यह जानने के लिए बेचैन भारत की अपनी सामाजिक संरचना को देखें तो यहाँ सामंतवाद की रूढ़ियाँ प्रबल थीं। वे बार–बार नये रूपों में प्रकट होती थीं। वर्ण–व्यवस्था कट्टर थी। वह भी नये–नये रूपों में चुनौती की तरह प्रकट होती थी। विज्ञान की स्वीकृति के लिए बहुत लंबा संघर्ष जरूरी था। महावीर प्रसाद द्विवेदी, चंद्रधरशर्मा गुलेरी और प्रेमचंद का संघर्ष इसी दृष्टि से महत्वपूर्ण है। महाराष्ट्र में निम्न वर्ण में जन्म लेकर ज्योतिबा फुले (1827–1890) ने नवजागरण की प्रक्रिया न सिर्फ तेज की, बल्कि नवजागरण की एक दूसरी धारा के प्रवर्तन से प्रभुत्वशाली वर्ग को चुनौती दी। 1848 में उन्होंने निम्न जाति के लड़कों के लिए स्कूल खोला। 1851 में लड़कियों के लिए स्कूल खोला। ब्राह्मणेतरों को संगठित कर उन्होंने जो आंदोलन उन्नीसवीं शताब्दी में चलाया, उसी की अगली कड़ी बीसवीं शताब्दी में भीमराव अम्बेडकर कहे जा सकते हैं जिनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

स्वेदशी भाषाओं की प्रतिष्ठा के लिए विकसित नयी जागरूकता को भी बृहत्तर नवजागरण का जरूरी हिस्सा समझना चाहिए। गद्य का विकास कमोबेश सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में एक साथ हुआ। मुद्रण कला का विकास, पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन, पाठक वर्ग का उदय, पूर्व–पश्चिम की संस्कृति का संबंध और संघर्ष, मुक्ति संघर्ष की चेतना, दलितों–उपेक्षितों का उत्थान, सामाजिक न्याय समता के लिए निरंतर संघर्ष, सौन्दर्याभिरुचि में बुनियादी बदलाव, विश्वभावना का विकास–ये तमाम संदर्भ मिलकर आधुनिक युग की मानसिकता का निर्माण करते हैं। भारतीय भाषाओं का आधुनिक साहित्य इसका उदाहरण है कि जिस यूरोप के संपर्क में हमारे यहाँ आधुनिक चेतना का विकास हुआ उसी ने नये अवरोध भी पैदा किये। पर इतिहास में आगे देखना जरूरी होता है, पीछे लौटना नहीं। अतः यूरोप के सकारात्मक अवदान को ग्रहण करते हुए ही हमें अपनी भारतीयता और अपनी आधुनिकता में संगति बिठानी है। आधुनिक भारतीय साहित्य आज विश्व साहित्य का जरूरी अंग है–यह स्थिति प्राप्त करने में भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

1.3.3 आधुनिक युग : साहित्यिक संदर्भ

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक यूरोप ही विश्व साहित्य का केंद्र था। साम्राज्य विस्तार और उपनिवेश निर्माण के क्रम में वह अफ्रीका, एशिया और अमरीका के साहित्य के संपर्क में आया। दूसरी ओर पूरे विश्व में आधुनिक युग की महत्वपूर्ण पहचान बनी उपनिवेशवाद विरोध और साम्राज्यवाद विरोध की चेतना। आधुनिक युग की यह महत्वपूर्ण पहचान बनाने में प्रेस की भूमिका महत्वपूर्ण रही है जिसके चलते गद्य आया और कितने ही नये रूपों और शैलियों को विकास का अवसर मिला। प्रेस की स्थापना प्रेस का उदय उन्नीसवीं शताब्दी के सांस्कृतिक जगत की बड़ी घटना है। प्रेस को ही साहित्य में आधुनिकता का वाहक कहा गया है जिसके प्रचार के सहायक हैं यातायात और संचार के विकसित साधन। प्रेस ने साहित्य को प्रजातांत्रिक रूप दिया। अब साहित्य के केंद्र में देवता या राजा–रानी न रहे। उनका स्थान साधारण जनता ने ले लिया। यूरोपीय संपर्क में जो नया युग शुरू हुआ उसमें अंग्रेजी शासकों, ईसाई मिशनरियों की अपनी भूमिका थी। सामाजिक सुधार के कार्यक्रमों में भी उन्होंने हिस्सा लिया। 1832 में श्रीरामपुर के मिशनरियों ने भारत की लगभग चालीस भाषाओं में अपने धर्मग्रंथ छापे। उनमें बघेली, छत्तीसगढ़ी, कन्नौजी, भोजपुरी जैसी बोलियाँ भी थीं। प्रेस आया तो गद्य आया और उसके विभिन्न रूप

आये। जैसे उपन्यास, कहानी, जीवनी, आत्मकथा आदि। पत्र–पत्रिकाओं का प्रसार बढ़ा। शिक्षित जनता के उदय और नवजागरण में उनकी हिस्सेदारी के कारण साहित्य की संवेदना में गुणात्मक अंतर आया। गद्य को अगर निराला ने जीवन संग्राम की भाषा कहा है तो उसके व्यापक अर्थ है। विदेशी भाषा के विरुद्ध अपनी भाषा की रक्षा और विकास के संदर्भ में गद्य के उदय की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

आधुनिक युग का साहित्य : आंदोलन और शैलियाँ

आधुनिक युग की संवेदना के निर्माण में यूरोपीय उपन्यास की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्नीसवीं शताब्दी में गद्य की नयी विधा के रूप में विकसित उपन्यास ने आधुनिक समाज के यथार्थ चित्रण के लिए बड़ी लोकप्रियता अर्जित की। तोल्सतोय के 'पुनर्जीवन' (1899) जैसे उपन्यास आधुनिक समाज की आलोचना करते हुए नयी चेतना या नये मनुष्य के जन्म की संभावना की ओर संकेत करते हैं। कविता में स्वच्छन्दतावाद ने एक नयी संबंध भावना को जन्म दिया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861–1941) की कृति 'गीतांजलि' (1913) को नोबेल पुरस्कार मिला। वे एशिया में राष्ट्रीय पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति के लिए पहले प्रतिनिधि तथा अग्रणी लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनमें प्राचीन भारतीय परम्परा और नयी यूरोपीय चेतना का सार्थक सामंजस्य है। अनेक विधाओं में उपलब्ध उनका साहित्य आधुनिक युग की सच्ची संवेदना विकसित करने में सबसे अधिक सहायक सिद्ध हुआ। बंकिम, शरत चंद्र, फकीर मोहन, सेनापति, तकषी शिवशंकर पिल्ले, रवीन्द्रनाथ, प्रेमचंद आदि के उपन्यासों ने भारतीय समाज के बदलते रूपों को सार्थक झलक दी। स्वच्छन्दतावाद, प्रतीकवाद, बिम्बवाद, यथार्थवाद वे अनेक आंदोलन हैं जिन्होंने आधुनिक युग की संवेदना विकसित करने के लिए नयी शैलियों का आश्रय लिया। परम्परा और आधुनिकता के द्वंद्व को समझने में 'द वेस्ट लैंड' (1922) के लेखक टी.एस. इलियट का साहित्य एक हद तक सहायक है। हिंदी कवि जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' (1936) लिखकर आधुनिक मनुष्य के संकट की ही पहचान करा रहे थे। लैटिन अमरीकी कवियों, कथाकारों ने यूरोपीय आधुनिकता के समानांतर ठेठ देसी आधुनिकता को महत्व दिया जो आंचलिकता के रंग में रची–बसी है।

राष्ट्रीय अस्मिता और विश्वभावना के गहरे संबंधों को लेकर आधुनिक युग में रूसी लेखक प्रायः चिन्तित रहे हैं। अफ्रीका का आधुनिक साहित्य उपनिवेशवाद विरोधी है और गहरे अर्थ में राष्ट्रवादी है। व्यापक अर्थ में आधुनिक भारतीय साहित्य नवजागरण और स्वतंत्रता की चेतना से अनुप्राणित रहा है। मुक्ति संघर्ष की प्रक्रिया में लगे हुए अनेक देशों की मूल भावधारा इसी नवजागरण और स्वाधीनता संघर्ष से स्फूर्ति प्राप्त करती है।

बोध प्रश्न–2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. आधुनिक युग की चेतना का निर्माण करने वाले तीन प्रमुख तत्वों का उल्लेख कीजिए :

   क) .....

   ख) .....

   ग) .....

2. वर्ष 1800 किसलिए महत्वपूर्ण है (अ) का चिह्न लगाकर बताइए।

   क) प्रेस की स्थापना के लिए ( )

ख) गीतांजलि के प्रकाशन के लिए ( )

ग) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के लिए ( )

घ) फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के लिए ( )

3. निम्नलिखित कृतियों के लेखकों के नाम लिखिए :

क) द वेस्ट लैंड .....

ख) पुनर्जीवन .....

ग) रंगभूमि .....

घ) कामायनी .....

4. महाराष्ट्र में निचले वर्ण में जन्म लेकर दलितों और स्त्रियों की शिक्षा के लिए आंदोलन चलाने वाले विचारक और कर्मयोद्धा का नाम लिखिए।

.....

.....

.....

अभ्यास

2. राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को किन विचारकों और विचारधाराओं ने प्रभावित किया। उत्तर पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

4. प्रेस के उदय ने साहित्य पर क्या प्रभाव डाला ?

.....

.....

.....

1.4 आधुनिक युग की मूल संवेदना

आधुनिक युग की अब तक की पृष्ठभूमि को समझने के बाद आइए हम इसकी मूल संवेदना को समझें। चूंकि उस दौर में भारत पर विदेशी शासन था इसलिए राष्ट्रीयता और स्वाधीनता की भावना का उदय स्वाभाविक था। इसी प्रकार इस सोच ने कि हम गुलाम क्यों बनें, हमारे यहाँ समाज सुधार के आंदोलनों की शुरुआत का कारण बना। एक ओर हमने अतीत की गलत रूढ़ियों और परंपराओं से मुक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न किया तो दूसरी ओर हमने अपनी परंपरा के श्रेष्ठ मूल्यों की रक्षा का दायित्व भी ग्रहण किया, यही नवजागरण की भावना थी।

1.4.1 राष्ट्रीय स्वाधीन चेतना

परदेशी वस्तु और 'परदेशी भाषा' के विरुद्ध भारतेन्दु ने जिस स्वाधीन चेतना की मांग की थी वह उत्तरोत्तर विकसित होती गयी। हाली का 'मुसद्दस' और भारतेंदु के नाटक देश में उठती नयी जातीय राष्ट्रीयता की भावना को व्यक्त कर रहे थे। प्रसाद के नाटकों में यह स्वाधीन चेतना मौजूद है। इसे निराला, प्रेमचंद भी अपने साहित्य में महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति दे रहे थे। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने आधुनिक होने के प्रयत्न में इस चेतना को अनिवार्य सहयोगी माना था। विश्व परिप्रेक्ष्य में माना जाता है कि सामंतवाद की समाप्ति और पूंजीवाद के उदय के साथ ही राष्ट्र जैसी अवधारणा का उदय हुआ। पूंजीवाद के विकास के साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन का विकास हुआ। इसी तरह भारत में आधुनिक युग के आगमन नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन का श्रेय उपनिवेशवाद को दिया जाता है। फिर भी भारतीय संदर्भ में राष्ट्रीय स्वाधीनता की चेतना के उभार के पीछे निजी कारण हो सकते हैं। आधुनिक भारतीय साहित्य में भी जहाँ–तहाँ मातृभूमि की कल्पना जिस रूप में मौजूद है, उसे देखते हुए ऐसे निजी कारणों की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है। यह राष्ट्रीय स्वाधीन चेतना आधुनिक युग की मूल संवेदना है पर उसकी भी कई धाराएँ हैं। वे आधुनिकता जैसे मूल्य बोध के लिए कभी–कभी उलझन भी पैदा करती हैं। साधनों (हिंसा, अहिंसा) की दृष्टि से ही नहीं, अधिक बुनियादी रूप में भी कई बार 'हिंदू चेतना' जैसे विचार राष्ट्रीयता की और संकीर्ण सीमित अवधारणा लेकर चलते हैं जो अंततः दूसरे धर्मावलंबियों में राष्ट्रविरोधी प्रतिक्रिया के रूप में उभरता है इससे संघर्ष करते हुए हमने आधुनिक युग की चुनौतियों के अनुरूप राष्ट्रीयता की व्यापक धारणा विकसित की है–जिसके अपने मूल्य हैं–लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता आदि।

1.4.2 नवजागरण

उन्नीसवीं सदी के नवजागरण में हिंदुत्व के आग्रह के सभी रूप एक से न थे। कहीं दृष्टि अधिक उदार थी और परम्परा के सार्थक ग्रहण को महत्व देती थी (ब्रह्म समाज, विवेकांनद)। कहीं वैदिक हिन्दुत्व के पोषण पर अतिरिक्त बल था (आर्य समाज)। उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय नवजागरण के अग्रदूत राजाराम मोहन राय अपने समय की सांस्कृतिक चेतना को नवजागरण कह देते थे जबकि बंकिम चंद्र पंद्रहवीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन को सच्चे अर्थों में नवजागरण मानते थे। हिंदी आलोचक डा. रामविलास शर्मा ने भक्तिकालीन आंदोलन को लोकजागरण कहा और उन्नीसवीं शताब्दी के जागरण को नवजागरण कहा। अधिक महत्वपूर्ण संदर्भ यह कि उन्होंने अलग से हिंदी नवजागरण की विशिष्टता खोजने और स्पष्ट करने की कोशिश की। हिंदी नवजागरण की विशिष्टता बताने के लिए उन्होंने सन् अठारह सौ सतावन की राज्य–क्रांति को उसका बीज माना। विचार के लिए यह एक संदर्भ हो सकता है पर यह एक सच्चाई है कि भारतेंदु तथा उनके सहयोगियों ने बंगाल के नवजागरण से ही प्रेरणा ली थी। आधुनिक युग की बहुत सी विशेषताएँ, नयी संबंध भावना, नयी सौंदर्य दृष्टि आदि बंगाल के नवजागरण की ही देन है।

बोध प्रश्न–3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. नयी जातीय राष्ट्रीयता के प्रतिनिधि किन्हीं दो लेखकों के नाम बताइये।

   क) .....

   .....

ख) .....

.....

2. उन्नीसवीं सदी के नवजागरण में हिन्दुत्व के आग्रह मुख्यतः दो प्रकार के थे। उनमें मुख्य अंतर बताइये।

.....

.....

.....

1.5 मूल्यांकन

विश्व इतिहास में आधुनिक युग की शुरुआत मानव सभ्यता के नये चरण की शुरुआत थी। ज्ञात इतिहास में पहली बार मनुष्य ने अपने सोच के केंद्र में स्वयं मनुष्य को रखा–न धर्म को, न भाग्य को, न राजा को, न पुरोहित को। धर्म, जाति, लिंग, नस्ल, भाषा, क्षेत्र के आधार पर मनुष्य–मनुष्य के बीच किसी तरह का भेदभाव करने को बुरा माना गया। मनुष्य के बीच समानता को एक आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित किया गया और लोकतंत्र के द्वारा एक ऐसी राजनीतिक प्रणाली को विकसित किया गया जिसमें सभी की बराबर की भागीदारी हो। आधुनिक युग के इसी अवदान के मूल्यांकन पर यहाँ विचार कर रहे हैं।

1.5.1 आधुनिक युग का अवदान

हिंदुस्तान की कहानी लिखते हुए जवाहरलाल नेहरू ने अनुभव किया था कि हम मानव जाति के एक महायुग में रह रहे हैं और इस सौभाग्य की हमको कीमत देनी होगी। हर महायुग में संघर्ष और अस्थिरता की भरमार होती है, पुरानी व्यवस्था को छोड़कर नई के लिए कोशिश होती है। उन्नीसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी के इस अंतिम दशक तक आधुनिक युग समस्याओं और चुनौतियों से घिरा रहा है। इस अर्थ में भी यह एक महान युग है। आधुनिक युग वस्तुतः इसलिए महान् है क्योंकि पहली बार इसमें मनुष्य को सभ्यता के केंद्र में रखा गया और उसके बीच समानता पर बल दिया गया। सामंतवाद के संकट और पूंजीवाद के विकास के साथ ही उपनिवेशवाद विरोधी चेतना का विस्तार हुआ और राष्ट्रीय स्वाधीनता जैसी चेतना ने रूप और आकार ग्रहण किया। पुनर्जागरण या नवजागरण के युग का एक महत्वपूर्ण अवदान है–मध्ययुगीन मानसिकता से मुक्ति, अनेक सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति। उसका दूसरा पहलू है नयी प्रगतिशील विचारधारा, नयी संबंध भावना का उदय। दलित और शोषित का मुक्ति के लिए संघर्ष, स्त्री की मुक्ति के लिए संघर्ष, सामाजिक न्याय और समानता के लिए संघर्ष, लोकतंत्र धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के पक्ष में संघर्ष आधुनिक युग को महत्वपूर्ण बनाते हैं। इस नवजागरण और स्वाधीन चेतना के सम्यक विकास के पीछे यूरोपीय शिक्षा की भूमिका रही है, प्रेस एवं पत्रकारिता का विकास है, शिक्षात्मक समितियों–संस्थाओं का उदय है, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रचार–प्रसार है।

1.5.2 आधुनिक युग के संदर्भ में भारतीय साहित्य की पहचान

आधुनिक युग के संदर्भ में भारतीय साहित्य की एक अपनी नयी पहचान बनी। नवजागरण के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हम देख चुके हैं कि राजा राममोहन राय, माइकेल मधुसूदन दत्त,

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय राष्ट्रीयता के साथ अंतर्राष्ट्रीयता या विश्व भावना के विकास के लिए सचेष्ट थे। स्वच्छंदतावाद और यथार्थवाद जैसी विचारधाराओं के पीछे नवजागरण और स्वाधीन चेतना के लिए चलाया गया लंबा संघर्ष था। 1936 के प्रगतिशील लेखक आंदोलन में रवीन्द्रनाथ, शरत चंद्र, वल्लतोल, हसरत मोहानी, जवाहरलाल नेहरू की हिस्सेदारी थी। आधुनिकता के उदय और विकास में केवल इंग्लैंड–अमरीका की भूमिका महत्वपूर्ण नहीं रही है। अफ्रीकी, एशियाई लातीनी अमरीकी साहित्य ने आधुनिकता की चेतना को नया अर्थ दिया। जहाँ तक एशियाई देशों के साहित्य का सवाल है उसकी अंतर्वस्तु प्रायः स्वदेशी ही रही। एशियाई देशों का आधुनिक साहित्य मुक्ति की चेतना से संपन्न है। आधुनिक भारतीय साहित्य एक साथ अपनी आधुनिकता और भारतीयता, आंचलिकता और लोकोन्मुखता तथा विश्वजनीनता के लिए महत्वपूर्ण है। एक और आधुनिक युग ने भारतीय साहित्य को विश्व चेतना से संपन्न किया, दूसरी ओर उसे अपनी जड़ों को खोज के प्रति उत्सुक बनाया।

बोध प्रश्न–4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. आधुनिक युग किस अर्थ में महान युग है?

.....

.....

.....

2. राजा राममोहन राय, बंकिम चंद्र आदि राष्ट्रीयता के साथ किस विशेष संदर्भ पर बल दे रहे थे?

.....

.....

.....

अभ्यास

4) राष्ट्रीयता स्वाधीनता की चेतना का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

5) आधुनिक युग का प्रमुख अवदान बताइए।

.....

.....

.....

1.6 सारांश

- 'आधुनिक युग की भूमिका' नाम की इकाई में आपने आधुनिक युग का आरंभ कब से हुआ इसका अध्ययन किया है। यूरोप में वैसे तो पंद्रहवीं शताब्दी के पुनर्जागरण से नये

जीवन मूल्य उभरने लगे थे परंतु आधुनिक युग की शुरुआत फ्रांस की राज्य क्रांति और औद्योगिक क्रांति से ही हुई जिसने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के नये मूल्य दिये।

- भारत में जब 1757 में प्लासी युद्ध के बाद अंग्रेजों के राज की स्थापना हुई, तब यहाँ सामंती व्यवस्था का ही वर्चस्व था। अंग्रेजों ने 19वीं शती के आरंभ में पश्चिमी ढंग की शिक्षा पद्धति आरंभ की और राज्य व्यवस्था में भी कई नये बदलाव किये। इनके संपर्क में आने से भारतीयों में भी नये विचारों का उदय हुआ। कल कारखानों की स्थापना, प्रेस की स्थापना आदि ने भारतीय जीवन में व्यापक परिवर्तन किये। एक नये मध्यवर्ग का उदय हुआ जिसने आधुनिक चेतना को अपने देशवासियों में प्रचारित करने का जिम्मा लिया।

- उन्नीसवीं शताब्दी में आरंभ हुए इस नवयुग की प्रमुख विशेषता है, समाज सुधार, अतीत का पुनर्मूल्यांकन, स्वाधीन चेतना, राष्ट्रीय भावना और समानता विवेकशीलता और लौकिकता के नये मूल्य।

- इन्हीं आधुनिक भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति उस युग के साहित्य के माध्यम से भी हुई। बंकिम चंद्र, गालिब, हाली, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रेमचंद, निराला, वल्लातोल, सुब्रह्मण्य भारती, कुमारन आशान आदि रचनाकारों ने आधुनिक भावबोध को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की और इस प्रक्रिया में उन्होंने सामंतवाद विरोध और साम्राज्यवाद विरोध की भावना को पुष्ट किया।

- आधुनिक युग पर पश्चिम के पूंजीवादी व्यवस्था, 1917 की सोवियत क्रांति और प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्धों का प्रभाव पड़ा। इसी दौर में भारत अपनी राष्ट्रीय मुक्ति के लिए भी प्रयत्नशील रहा और विभिन्न मंजिलों से गुजरते हुए 15 अगस्त 1947 को देश ने स्वतंत्रता हासिल की।

- इस युग में ही समाज सुधारकों और विचारकों ने नये भारत के निर्माण की मुहिम चलाई। सामंती सामाजिक और धार्मिक रूढ़िवाद के विरुद्ध समाज सुधार आंदोलन चलाया गया।

- प्रेस की स्थापना ने भारतीय भाषाओं के साहित्य के नये युग का सूत्रपात किया। स्वच्छंदतावाद और प्रगतिवाद ने साहित्य में नयी चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान की।

- आधुनिक युग की मूल संवेदना राष्ट्रीय स्वाधीन चेतना और नवजागरण की भावना है जिनका अध्ययन आप आगे की इकाइयों में विस्तार से करेंगे।

आशा है इस इकाई को पढ़ने के बाद उपर्युक्त को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

रामविलास शर्मा : भारतेन्दु हरिश्चंद्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

रामविलास शर्मा : महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, राजमल प्रकाशन, नई दिल्ली

पूरनचंद्र जोशी : परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

के. दामोदरन : भारतीय चिंतन परंपरा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।

1.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न –1

1) घ)

2) क) स्वाधीन चेतना ख) नवजागरण ग) विश्व दृष्टि

3) क) इतिहास–दृष्टि, परम्परा का बोध, वैज्ञानिक विवेक ख) गोरा

बोध प्रश्न–2

1) क) उपनिवेशवाद विरोध

   ख) साम्राज्यवाद विरोध

   ग) सामंतवाद विरोध

2) घ

3) क) टी.एस.इलियट

   ख) तोल्सतोय

   ग) प्रेमचंद

   घ) जयशंकर प्रसाद

4) ज्योतिबा राव फुले

बोध प्रश्न –3

1) क) हाली ख) भारतेंदु

2) एक में अतीत के पुनरुत्थान पर बल था जबकि दूसरे में नये युग के अनुरूप परिवर्तन पर बल था।

बोध प्रश्न –4

1) देखिए उपभाग 1.5.1

2) राष्ट्रीयता के साथ विश्व भावना पर भी बल दे रहे थे। .

अभ्यास

1) देखिए उपभाग 1.2.2

2) राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को फ्रांस की राज्य क्रांति, मार्क्सवाद तथा 1917 की सोवियत क्रांति ने प्रभावित किया। बाल्तेयर, रूसो, मार्क्स, लेनिन ताल्स्ताय आदि विचारकों ने भी अपना प्रभाव डाला।

3) देखिए 1.3.3 उपभाग।

4) देखिए उपभाग 1.4.1

5) देखिए उपभाग 1.5.1